मिस्र की नावें

जेफ्री स्कॉट

चित्र: नैन्सी कार्लसन

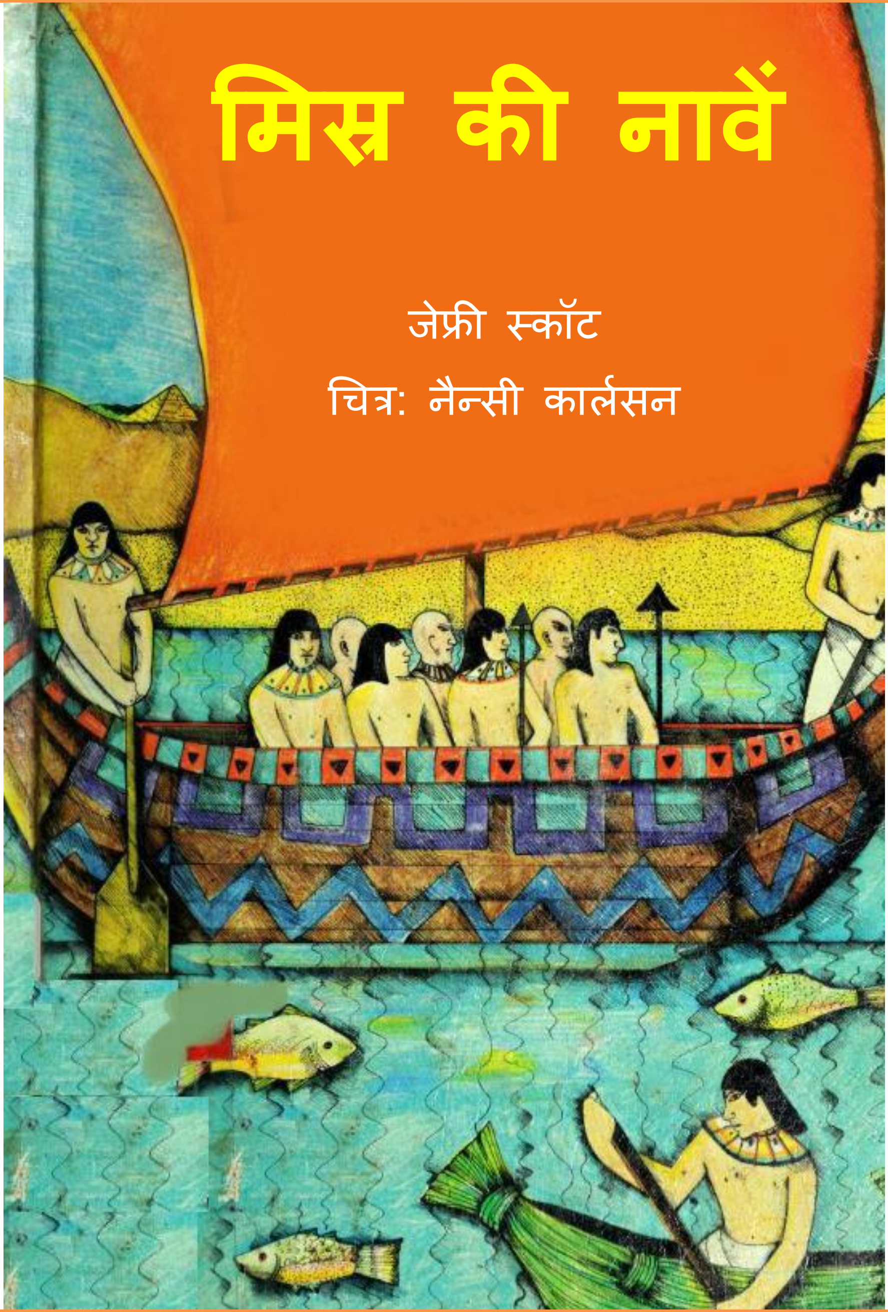

मिस्र की नावें

जेफ्री स्कॉट

चित्र: नैन्सी कार्लसन

4,000 साल पहले मिस्र के लोगों ने पूछा,

"सूर्य आकाश में कैसे घूमता है?"

उन्होंने जो उत्तर दिया वो था:

"एक नाव सूर्य को, आसमान में लेकर जाती है."

वो उत्तर अच्छा था, क्योंकि नावें मिस्त्रवासियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण थीं.

मिस्रवासी, एक नदी के किनारे रहते थे.

उस नदी को वो नील (नाइल) बुलाते थे.

आज वो एक बहुत महत्वपूर्ण नदी है.

बहुत पहले वो और भी महत्वपूर्ण थी.

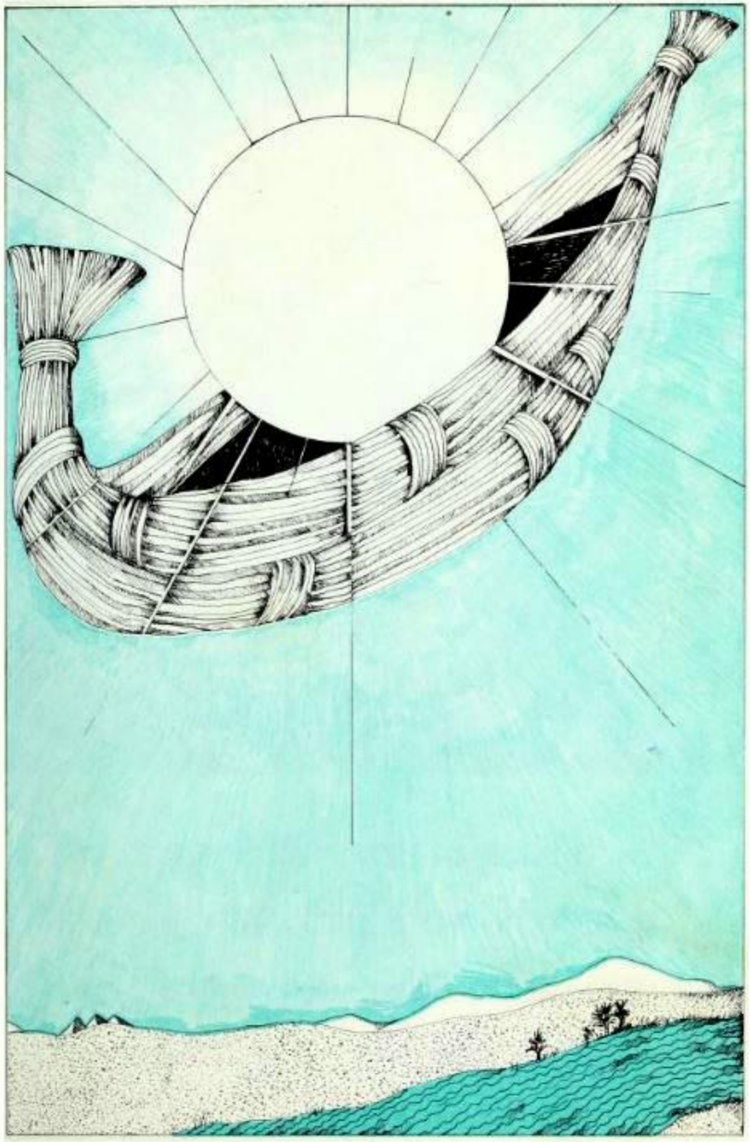

आइए 4,000 साल पहले के काल में वापस जाएं.

यदि हम नील नदी के तट पर खड़े होते, तो हम क्या देखते?

हम नदी के किनारे को देखते.

वहां एक छोटी सी नाव है.

वो कुछ-कुछ डोंगी जैसी दिखती है.

वो डोंगी ऊंचे-ऊंचे नरकटों से छिपी है.

एक आदमी उसमें बैठकर शिकार कर रहा है.

किनारे से दूर हमें एक लंबी लकड़ी की नाव दिखाई देती है.

वो राजा के संदेशवाहक की नाव है.

वो सैनिकों से भरी हुई है.

संदेशवाहक नाव, एक बड़े सफेद पाल वाली नरकटों (रीड) की बनी नाव को जल्दी से पार कर लेती है.

पाल के नीचे डेक पर अनाज की टोकरियाँ और तेल के घड़े रखे हैं.

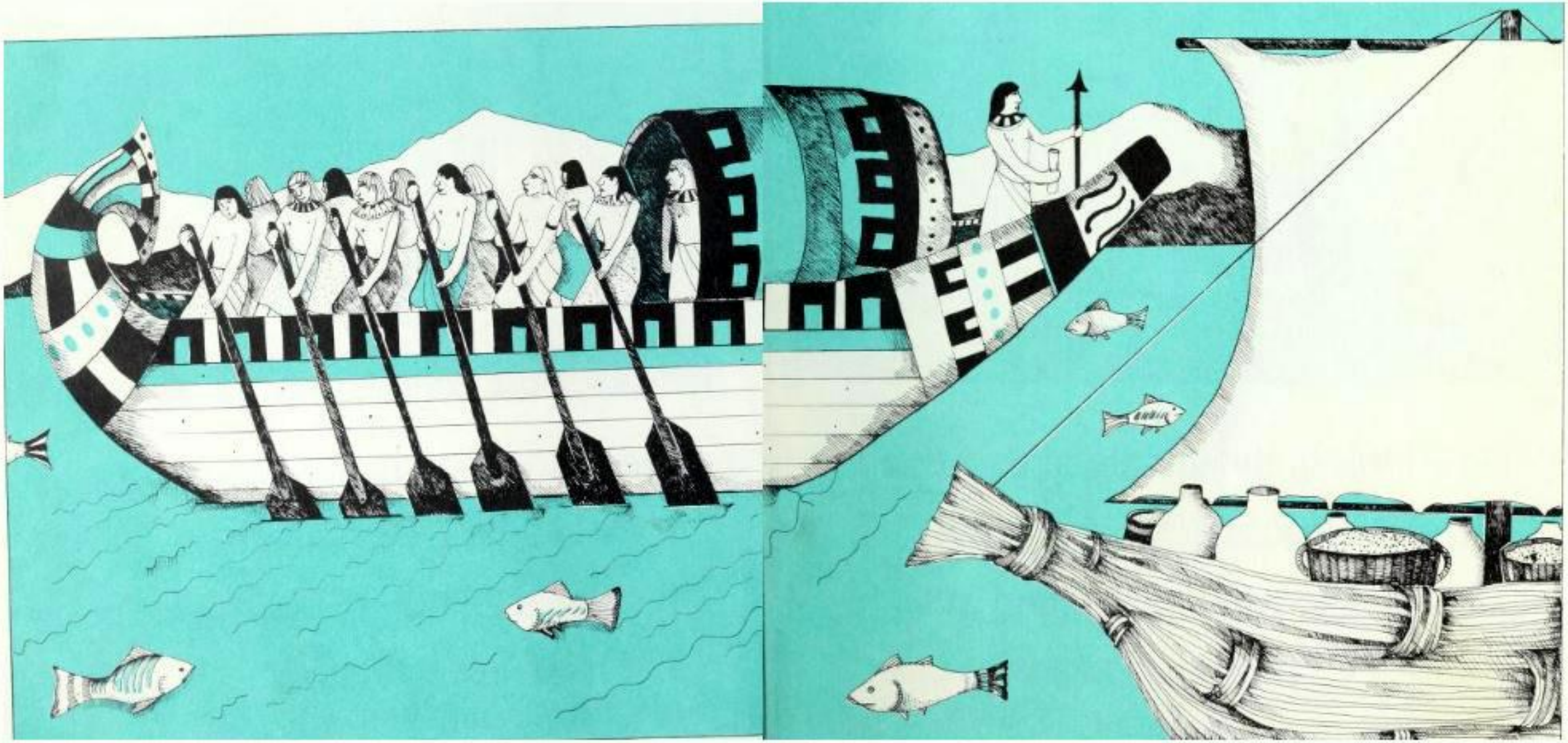

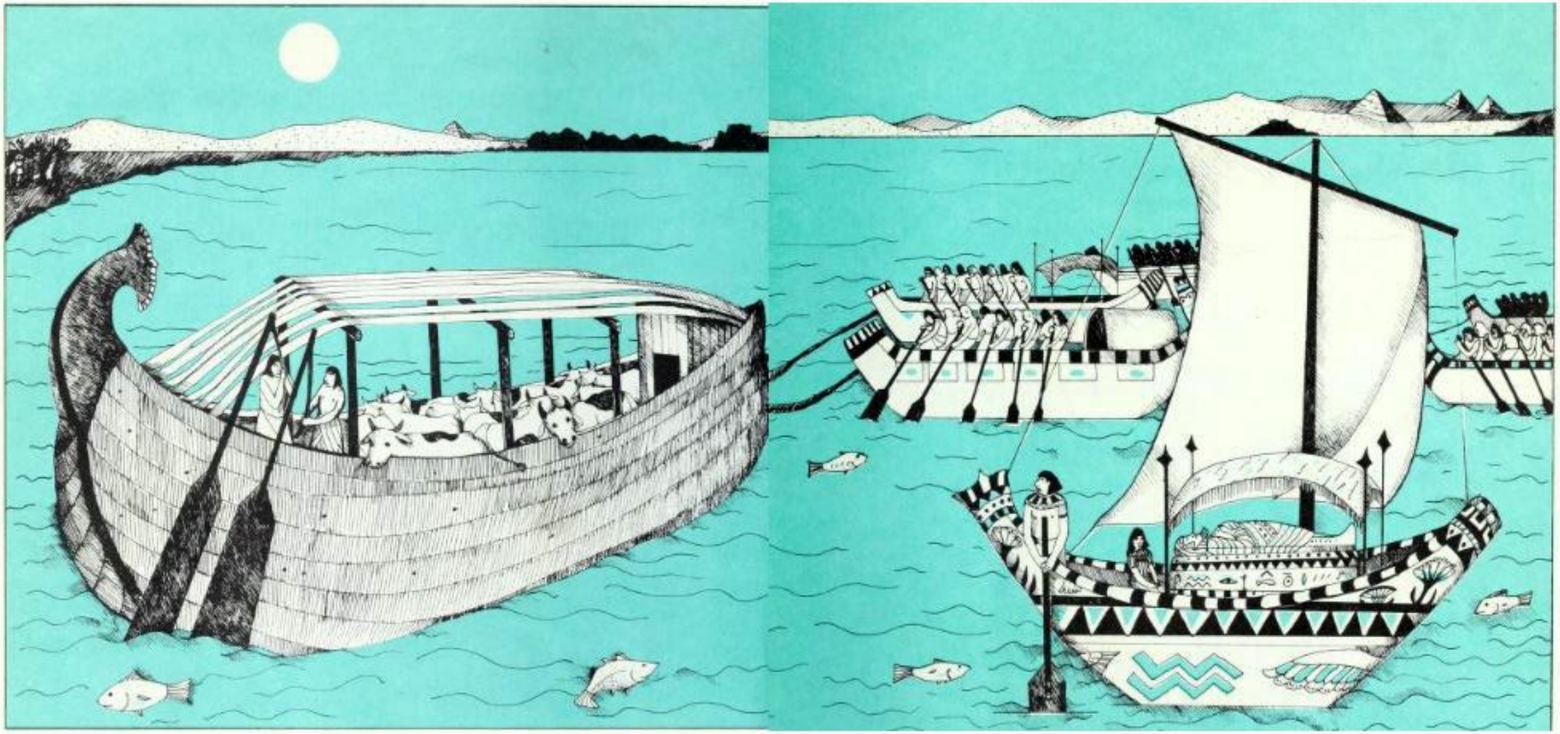

अब नदी के बीच में देखें.

वहां एक बड़ा बजरा (बार्ज) है.

छोटी नावें उस बजरे को खींच रही हैं.

बजरा, मवेशियों को ले जा रहा है.

वो जानवर कितना शोर मचा रहे हैं!

मृत व्यक्ति को ले जानी वाली नाव अगर बजरे से दूर रहे, तभी अच्छा होगा!

हमने नील नदी पर जितनी भी नावें देखीं वे सभी काम कर रही थीं.

वे भोजन और जानवरों को, गाँव से शहर ले जा रही थीं.

वे मिस्र के राजा के लिए पत्र और सन्देश ले जा रही थीं.

वे मरे लोगों को उनकी कब्रों तक ले जा रही थीं.

मिस्रवासियों के लिए नावें बहुत काम करती थीं.

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मिस्रवासी मानते थे कि सूर्य को भी एक नाव की ज़रुरत थी!

चलें, मिस्र की कुछ अन्य नावों को और करीब से देखें.

नदी पर सबसे छोटी नाव सबसे पुरानी है.

इसे एंबैच (एम-बाख) कहा जाता था.

शायद एंबैच मिस्र में बनाई गई पहली नाव थी.

पहली एंबैच कब बनाई गई, वो ठीक-ठीक किसी को नहीं पता.

लेकिन एक अनुमान के अनुसार वो शायद 6,500 साल पहले बनी हो.

प्रारंभिक मिस्रवासियों को पता था कि लकड़ी अच्छी तरह तैरती थी.

वे जानते थे कि लकड़ी से अच्छी नावें बनेंगी.

लेकिन मिस्र में बहुत कम पेड़ थे.

मिस्रवासी लकड़ी की बहुत सारी नावें नहीं बना सकते थे.

मिस्रवासियों के सामने पेड़ों की एक बड़ी समस्या थी.

फिर वे दूसरी किस चीज़ से अपनी नावें बनाते?

उन्होंने एक लंबे, पतले पौधे नरकट (रीड) का उपयोग किया.

नरकट नदी के किनारे प्रचुर मात्रा में उगते थे.

नरकट नील नदी के दोनों किनारों पर उगते थे.

मिस्रवासियों ने देखा कि नरकट भी पानी में तैरते थे.

हो सकता है कि अगर कई नरकटों को एक-साथ बाँधा जाए तो उस पर बैठा कोई व्यक्ति बिना डूबे तैर सके.

एंबैच, नरकटों के दो बंडलों से बनी थी.

वे सिरों पर एक-साथ बंधे थे.

बीच में, उन्हें इतना फैलाया गया था कि एक आदमी उनके बीच बैठ सकता था.

फर्श बनाने के लिए बंडलों के बीच में नरकटों की एक चटाई बंधी थी.

पूरी तरह बन जाने के बाद एंबैच एक छोटी डोंगी की तरह लगती थी.

वो एक साधारण, छोटी नाव थी.

एक व्यक्ति उसे चप्पू से चला सकता था.

एंबैच, शिकार के लिए एक अच्छी नाव थी.

लोग उसे नदी के किनारे-किनारे चलाते थे.

फिर वो वहां रहने वाले जानवरों को पकड़ते थे.

नरकटों को काटकर इकट्ठा करके लाने के लिए भी एंबैच उपयोगी थी.

उन नरकटों का उपयोग अन्य एंबैच बनाने के लिए किया जाता था.

नरकटों का उपयोग एक प्रकार का कागज बनाने के लिए भी किया जाता था.

उन एंबैच नावों ने बहुत अच्छा काम किया.

इसलिए एंबैच अभी भी उपयोग की जाती हैं.

एंबैच जैसी नावों का उपयोग आज भी नील नदी के कुछ हिस्सों में किया जाता है.

जब उन्हें पहली बार बनाया गया था तबसे अब 6,000 से अधिक वर्ष बीत चुके हैं!

बड़ी, मजबूत नावों को बड़े, लंबे नरकटों के बंडलों से बनाया जाता था.

यह एंबैच की तरह ही नरकटों से बनी एक नाव है.

लेकिन वो बहुत बड़ी थी.

इस नाव में छह मल्लाह थे.

इसमें एक पाल भी थी.

जब हवा चलती, तो पाल नाव को धक्का देती थी.

पाल एक ऊँचे खंभे से बंधी होती थी जिसे मस्तूल (मास्ट) कहते थे.

मस्तूल को नाव के किनारे बंधी रस्सियां पकड़कर रखती थीं.

मस्तूल को पकड़कर रखने के लिए पाल वाली नावों को अधिक मोटे पेंदे की ज़रुरत होती थी.

मजबूत पेंदे के कारण पाल वाली नावें और अधिक सामान ढो सकती थीं.

लेकिन इस तरह की बड़ी, भारी नावों को चलाने के लिए लोगों की जरूरत होती थी.

इसलिए नाव के पीछे दो व्यक्ति खड़े होते थे.

वो नाव को बड़े पैडिल के साथ चलाते थे.

अन्य लोग पाल से बंधी रस्सियों को पकड़कर रखते थे.

वो हवा पकड़ने के लिए पाल को घुमाते थे.

जैसे-जैसे समय बीतता गया, मिस्र भी बढ़ता गया.

धीरे-धीरे वहां कुछ स्थानों पर लकड़ी भी मिलने लगी.

मिस्र अपने पड़ोसियों से भी लकड़ी खरीदने लगा.

मिस्रवासियों ने लकड़ी के बदले में उन्हें सोना और गेहूं बेचा.

बदले में उन्होंने लकड़ी खरीदी.

बेशक, इन सभी चीजों को ले जाने के लिए उन्हें और नावों की जरूरत पड़ी.

उन्हें बड़ी नावों की ज़रुरत पड़ी.

लेकिन अब वे लकड़ी की नावें बना सकते थे.

यह लकड़ी की बनी एक नाव है.

इसे मर्चेंटमैन कहते थे.

मर्चेंटमैन नाव बहुत बड़ी थी.

वो मजबूत थी.

वो नरकटों वाली नावों से कहीं अधिक माल ढो सकती थी.

और क्योंकि वे लकड़ी की बनी थी, इसलिए वो नरकटों की नावों से अधिक समय तक चलती थी.

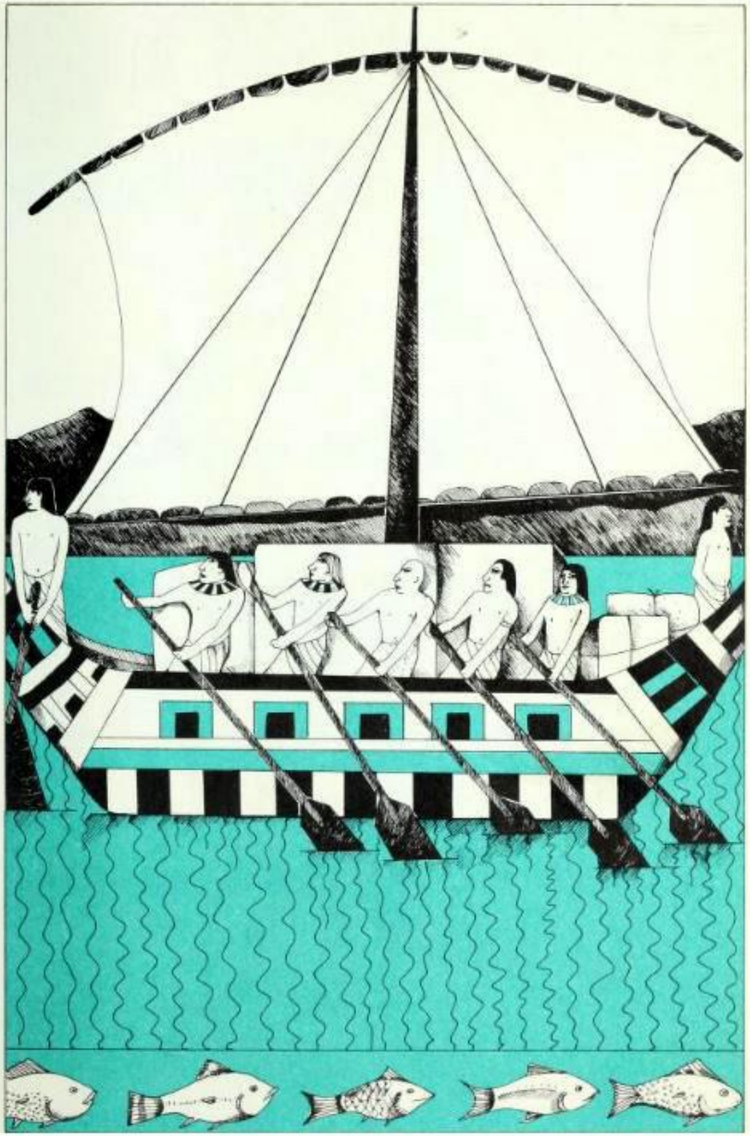

मर्चेंटमैन नाव में पैडल्स नहीं थे.

उसकी बजाय उनके पास चप्पू थे.

चप्पू, पैडल से अधिक लंबे होते हैं.

उन्हें चलाने वाले लोग "रोवर" कहलाते हैं.

आज हम चप्पू चलाने के लिए बैठते हैं.

लेकिन मिस्रवासी अलग तरह से चप्पू चलाते थे.

पहले वे उठकर खड़े होते थे.

फिर वे चप्पू को पानी में डालते थे.

इसके बाद, वे वापस चप्पू खींचते और उसी समय बैठ जाते थे.

ऐसा लगता था जैसे वे अपनी सीट पर गिर रहे हों.

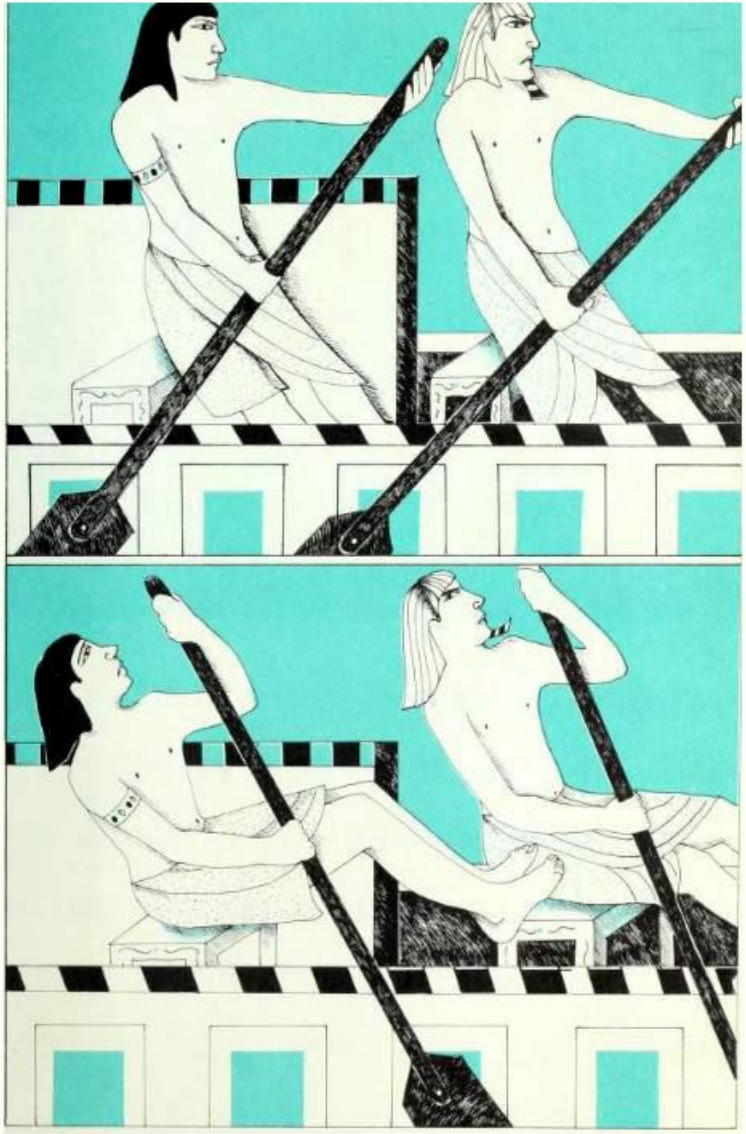

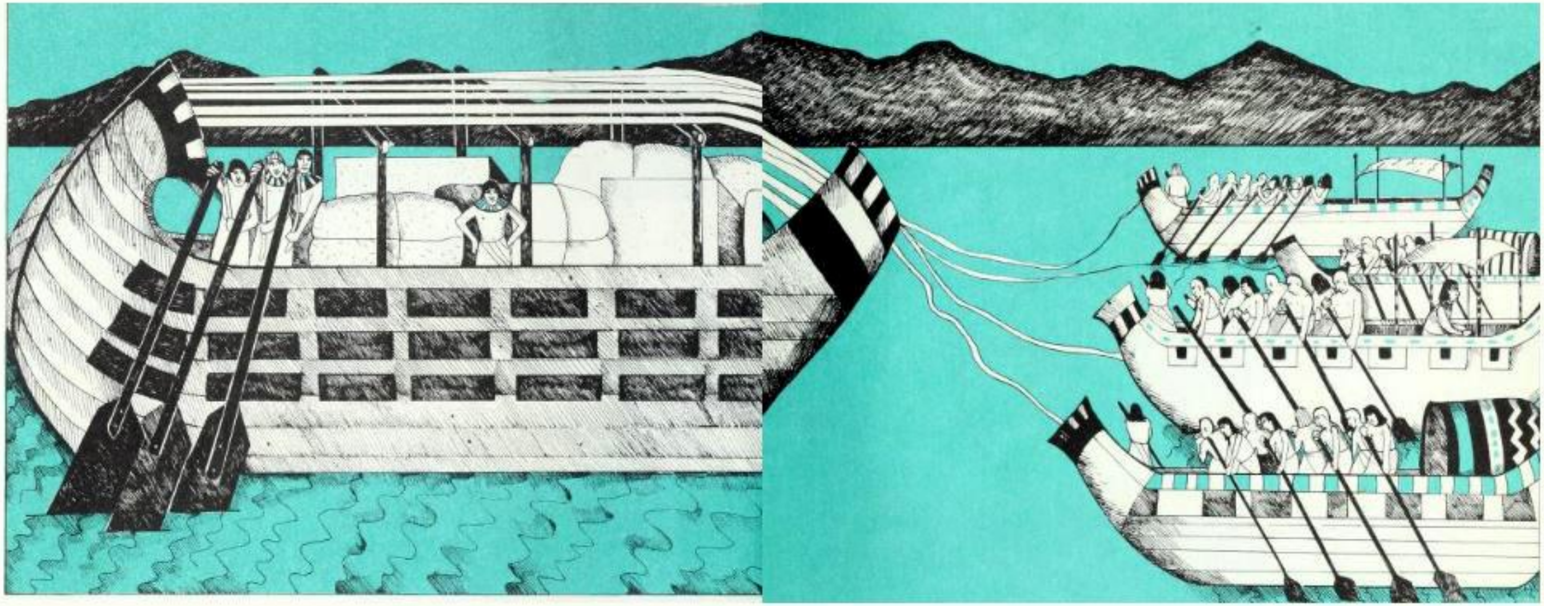

नील नदी पर एक नाव ऐसी थी जिसके
सामने दूसरी नावें एक खिलौना दिखती थीं.

वो एक बजरा (बार्ज) था.

कुछ बजरे जानवरों को ढोते थे.

दूसरे बजरे निर्माण के लिए पत्थर ढोते थे.

बजरे में कोई पाल या चप्पू नहीं होता था.

उसे खींचना पड़ता था.

छोटी नावें उन्हें खींचती थीं.

प्रत्येक छोटी नाव को रस्सियों से बजरे से बांधा जाता था.

गुलाम उन छोटी नावों को खेते थे.

और फिर बजरा धीरे-धीरे नील नदी पर यात्रा करता था.

बजरे लकड़ी के बने होते थे.

लेकिन वे काफी हद तक नरकटों की नावों की तरह ही बनाए जाते थे.

आज नावों के तलों के बीचों-बीच लकड़ी का एक मजबूत टुकड़ा होता है.

हम लकड़ी के इस टुकड़े को "कील" कहते हैं.

वो नाव को मजबूत बनाता है.

मिस्रवासियों को "कील" के बारे में पता नहीं था.

उन्होंने अपनी नावों को अन्य तरीके से मजबूत बनाया.

उन्होंने बजरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लम्बी-लम्बी रस्सियाँ बाँधीं.

यह रस्सियाँ बजरे के शीर्ष के साथ-साथ चलती थीं.

वो रस्सियाँ नाव के सिरों को ऊपर रखती थीं.

वो बजरे को भी मजबूत बनाती थीं.

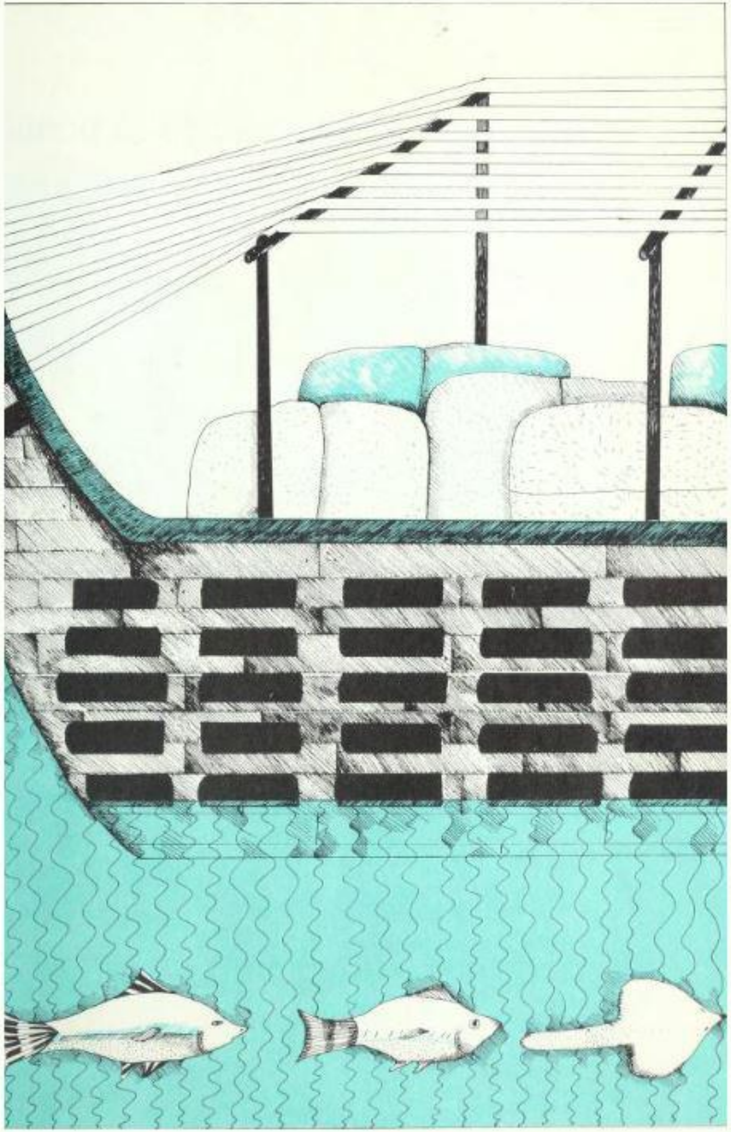

राजा जैसे महत्वपूर्ण लोग अक्सर नावों में यात्रा करते थे.

हम राजा की नाव को जल्द ही ढूंढ पाएंगे.

राजा की नाव को कई डिजाइनों के साथ खूबसूरती से पेन्ट किया जाता था.

कभी-कभी उन डिजाइनों में कहानियां भी छिपी होती थीं.

राजा की नाव पर कपड़े का एक टुकड़ा चार बांसों से लटका होता था.

राजा उस छत के नीचे बैठता था.

जिससे वो तेज धूप से बच सके.

नाव पर कई नौकर-चाकर होते थे.

वो राजा का भोजन तैयार करते थे.

वो राजा को ठंडा रखने के लिए पंखे झलते थे.

अन्य नावों ने भी राजा की नाव की नक़ल की.

वे राजा की रक्षा के लिए नाव पर सैनिक रखते थे.

निर्णय लेने में मदद करने के लिए नाव पर राजा के मंत्री और सलाहकार भी होते थे.

कभी-कभी दूत राजा की नाव पर सन्देश लेकर आते थे.

एक दूत ने राजा को आकर सन्देश दिया.

राजा ने उसे अपना उत्तर दिया.

फिर दूत जल्दी से चला गया.

राजा कभी-कभी अपनी नाव से अपने देश पर शासन भी करते थे!

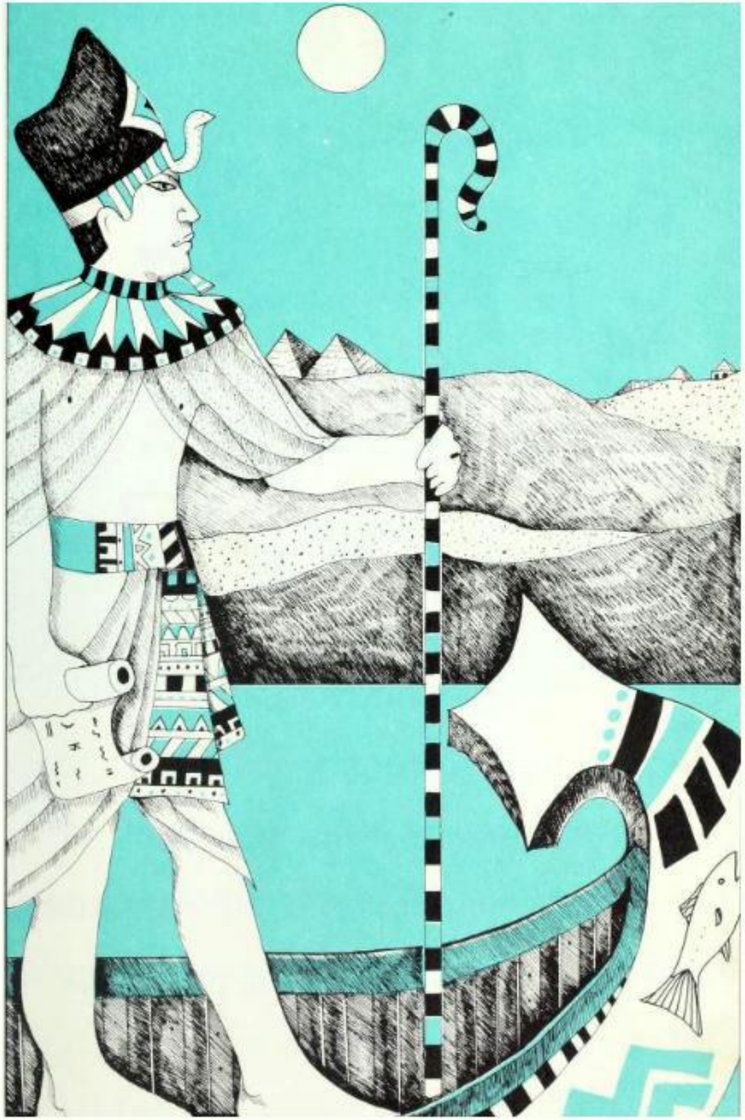

मिस्र की कुछ नौकायें मृत ममियों को, उनकी कब्रों तक पहुँचातीं थीं.

उन नावों को ममियों की तरह पेन्ट किया जाता था.

उन पर पौधों, जानवरों और लोगों के चित्र बने होते थे.

मिस्रवासी मानते थे कि उन तस्वीरों में जादुई शक्तियां होती थीं.

वे मृत व्यक्ति को फिर से जीवित करने में मदद करती थीं.

वे उसे "मृत्यु के बाद का जीवन" बुलाते थे.

मृत्यु के बाद के जीवन में भी व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है.

इसलिए नाव, भोजन के बक्से लेकर जाती थीं.

और साथ में कुर्सियाँ, बिस्तर, जूते और गहने भी.

यदि मृत व्यक्ति महत्वपूर्ण होता, तो उसके अंतिम संस्कार में कई नौकाएं भाग ले सकती थीं.

मिस्त्रवासियों के लिए मरने के बाद भी, नावें महत्वपूर्ण होती थीं!

मिस्रवासियों का मानना था कि सूर्य एक नाव में बैठकर आकाश को पार करता था.

उनका सूर्य देवता "रा" नाव में, सूर्य के साथ यात्रा करता था.

राजा तूतनखामन जैसे महत्वपूर्ण मिस्रवासी, मृत्यु के बाद के जीवन में, "रा" के साथ यात्रा करना चाहते थे.

इसलिए राजा टुट को कई नावों के साथ दफनाया गया.

ये असली नावें नहीं थीं.

वे नावों के मॉडल थे.

उन्हें सावधानी से टुट के मकबरे में रखा गया.

वे सभी पश्चिम दिशा में रखे गए.

उससे मॉडल नौकाओं को, टुट को जाने के लिए जादुई शक्ति मिली.

हमने मिस्र की जो पुरानी नावें देखी, वे आज ज्यादा चलन में नहीं हैं.

अब नील नदी पर आधुनिक नावें चलती हैं.

लेकिन कुछ साल पहले, थोर हेअरडाहल नाम के व्यक्ति के दिमाग में मिस्र की नावों को लेकर एक नायाब विचार आया.

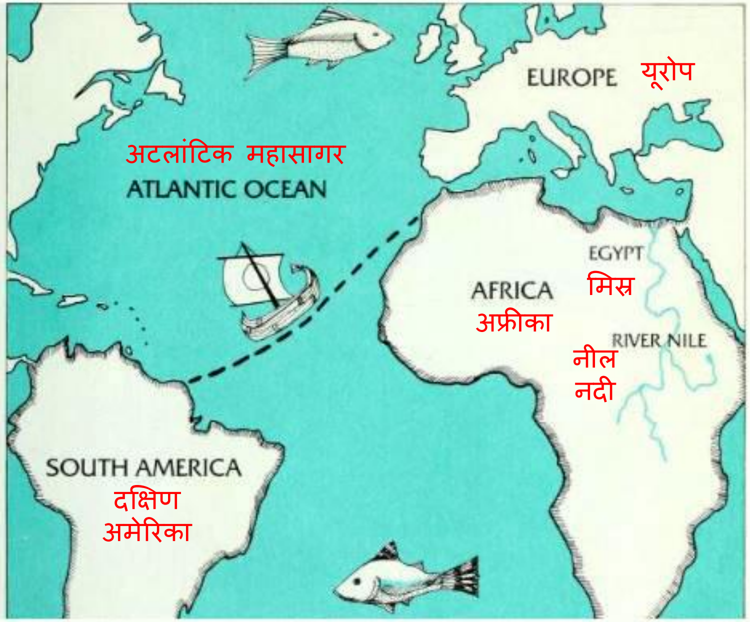

उन्हें लगा कि वो पुरानी नावें बहुत मज़बूत थीं.

वो नावें लम्बी दूरियों को पार करने के लिए भी काफी मजबूत होंगी.

हेअरडाहल ने पूछा, "क्या मिस्रवासी अपनी नावों में दक्षिण अमेरिका की यात्रा कर सकते थे?"

इसका पता लगाने के लिए उन्होंने नरकटों की एक नाव बनाई. उन्होंने इसका नाम "रा" रखा.

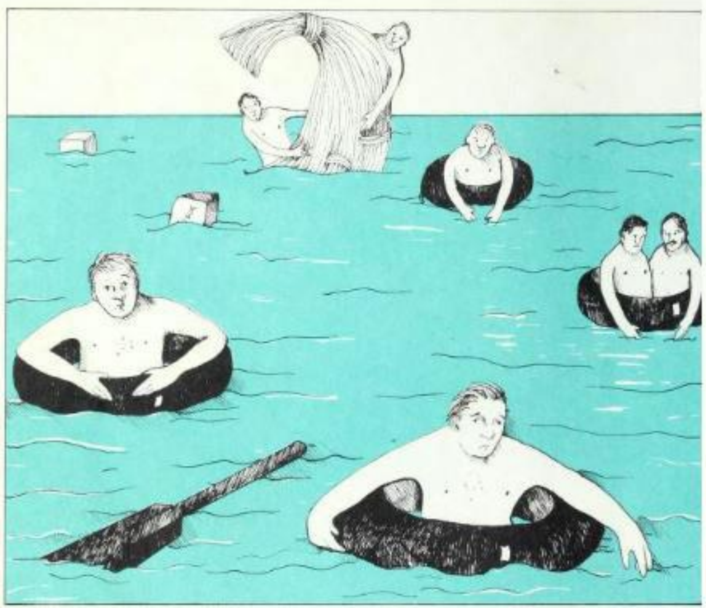

"रा" ने सात आदमियों को ढोया.

वे अटलांटिक महासागर को पार करने के लिए अफ्रीका से रवाना हुए.

और उन्होंने उस यात्रा को लगभग तय भी किया.

लेकिन "रा" अपनी मंज़िल से कुछ दूर पहले टूट गई.

लेकिन हेअरडाहल ने हार नहीं मानी.

उन्होंने फिर कोशिश की.

उन्होंने एक और नाव बनाई.

उन्होंने उसे "रा-2" नाम दिया.

इस बार वो अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हुए!

वो मिस्र की नरकटों वाली नाव में, अटलांटिक महासागर को पार कर पाए!

हेअरडाहल सही थे.

मिस्र की नावें सागर को पार करने के लिए भी काफी मजबूत थीं.

ज़रा सोचें उन नावों ने क्या-क्या काम किए!

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वे नावें मिस्त्रवासियों के लिए इतनी महत्वपूर्ण थीं—
जीवन में, और उसके बाद मृत्यु में भी!

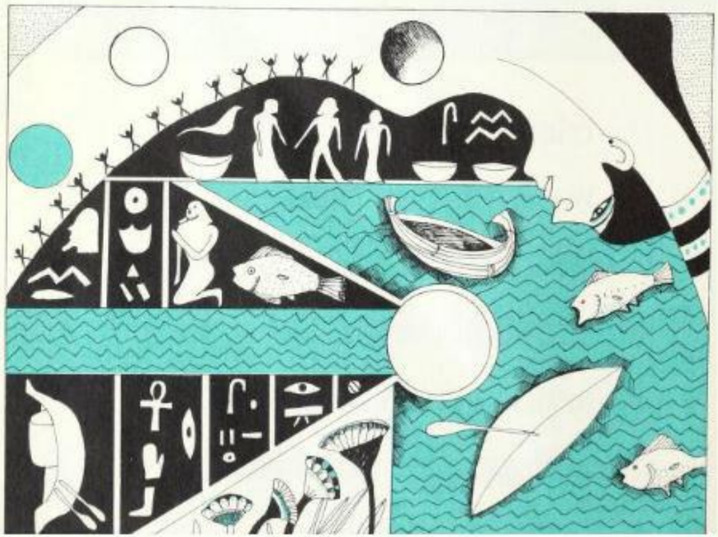

समाप्त